द्वितीय अध्याय

आधुनिकता : अर्थ और स्वरूप

आधुनिकता का अर्थ --

` आधुनिक ` शब्द संस्कृत के ` अधुना ` से बना है । ` अधुना ` का अर्थ ` अस्मिन काले ` याने ` इससमय ` है । यह ` इदम् ` शब्द का सप्तम्यंत कालवाचक शब्द है । ` अधुना ` शब्द से तद्धितशब्द बना है ` आधुनिक ` ।[1]

` आधुनिक ` शब्द से ` आधुनिकता ` शब्द बना है । ` आधुनिकता ` शब्द अंग्रेजी के ` मॉडर्निटी ` (Modernity) का हिन्दी अनुवाद है । मूल लॅटिन शब्द ` मोडो ( Modo ) से वह बना है। शब्दकोष में इसका अर्थ है -- Modolately , Just Now और ` मॉडर्न ` (Modern) का अर्थ है -- Being or existing at this time, Present.

आधुनिकता (Modernity) की व्याख्या पाश्चात्य देशों में सर्वप्रथम धार्मिक दृष्टिकोण से की जाती थी । इस में ` मॉर्डनिज्म ` शब्द ही आधुनिकता के पर्याय में अधिक प्रयुक्त होता था । ` इनसाईक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका ` में आधुनिकता (Modernisim) की विस्तृत व्याख्या की गयी है --`मॉर्डनिज्म` को एक नवीन ईश्वरपरक (धर्म वैज्ञानिक) संश्लेषण की प्राप्ति की अभिलाषा और प्रयास का श्रेष्ठ विवरण माना है ।` परसी गार्डनर् (Percy Gardener)

---

१ वा. शि. आपटे - संस्कृत कोष - १८९० ।

ने ` मॉर्डनिज्म ` को ईसाइयत इतिहास के विकास और प्रेरणादायक दो ढंगों से देखने का एक उच्चतर ऐक्य का मेल स्वीकार किया है ।`

वर्न स्टोर (Verner Storr) ने` मॉर्डनिज्म ` को वर्तमान ईसाइयत सत्य के आधुनिक ज्ञान की अभिव्यक्ति माना है । इसप्रकार ब्रिटेनिका में संगृहीत` मॉर्डनिज्म ` के विषाय में विभिन्न पाश्चात्य विद्वानों के विचारों से स्पष्ट हो जाता है कि सर्वप्रथम यहाँ पर इस शब्द का प्रयोग ईसाई धर्म से जोडा जाता था ।

` इनसाईक्लोपीडिया ऑफ अमेरिका ` में `मॉर्डनिज्म` को चर्च के विशिष्ट संदर्भ में संगठित आंदोलन नहीं, वरन् धर्म की एक पहुँच (approach) माना है ।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है, कि पाश्चात्यों में` मॉर्डनिज्म ` के अर्थ का व्यंजक आधुनिकता का प्रचलित धर्म (ईसाई) एवं विज्ञान के विकास की दृष्टि में रखकर हुआ है। हिन्दी में` आधुनिकता` संबंधी विचारों की व्याख्या करते समय भी अधिकांश आलोचक इसे` मॉर्डनिज्म ` शब्द से मिलाने का प्रयास करते है । ` आधुनिकता` ` मॉर्डर्निटी` का हिन्दी अनुवाद है और इज्म (ism) होता है ।

भारतीय साहित्य के संदर्भ में आधुनिकता को तीन अर्थों में ग्रहण किया गया है -- १) कालवाचक रूप में -- इसका प्रयोग सर्व प्रथम आचार्य शुक्ल ने किया । शुक्लजी का यह` आधुनिक ` शब्द अंग्रेजी ` मॉडर्न ( Modern ) का पर्याय है । डॉ. रामगोपाल शर्मा दिनेश ने भी ` आधुनिकता` को कालवाचक के रूप में माना है । २) ` आधुनिकता` का कोश के अनुसार अर्थ है -- आजकल का, वर्तमान का, नये जमाने का, अर्वाचीन ,नया,वर्तमान समय का, नवीन,संप्रति का ।` इस अर्थ के अनुसार आधुनिकता का संबंध वर्तमान से है, तथा वर्तमान की

धारणा सम्य सापेक्ष है । इसे प्राचीन या गतकालीन के विरुध्द भी कहा जाता है । ३) `आधुनिकता` का तीसरा अर्थ विचारपरक दृष्टि से है, जिसके अनुसार मध्ययुगीन एवं पूर्ववर्ती विचारपध्दति से भिन्न यह एक नवीन जीवनदर्शन एवं पध्दति का वाचक है ।

विचारपरक दृष्टि से आधुनिकता एक मिश्र धारणा है जिसका निर्माण अनेक तत्वों से हुआ है । ये तत्व निम्नांकित है --

(१) अपने देशकाल के प्रति आधुनिकता का संबंध जीवन्त तथा जागरुक होता है । प्राचीन काल में मनुष्य देशकाल, युग, इतिहास के प्रति सचेत नहीं होता था, लेकिन आज इसके बारे में वह जाग्रत रहता है। इसीकारण आधुनिक जीवनदृष्टि में सामाजिक चेतना और राष्ट्रीय चेतना का निर्माण हुआ ।

(२) विवेकपूर्ण वैज्ञानिक दृष्टि । इसके कारण जीवनदृष्टि यथार्थ हो गयी । भावुकता के स्थानपर विवेकदृष्टि आयी । आदमी बुध्दिनिष्ठ हो गया ।

(३) जीर्ण, पुरातन का त्याग ।

(४) संशोधन तथा पुनर्मूल्यांकन में नवीन रूपों की आकांक्षा ।

(५) वैचित्र्य एवं नवीनता के प्रति आकर्षण ।

(६) अनिष्ट रुढियों का विरोध, विद्रोह और नवजीवन के विकास के लिए प्रयोग का आग्रह ।

डॉ. मदन मोहन भारद्वाज ने `आधुनिक - हिन्दी - मराठी नाटकों में युगबोध` शोध प्रबंध में आधुनिकता के अनेक अर्थ बताये हैं `[१] -- वे `आधुनिकता` को तीन संदर्भ में देखते हैं -- १) कालदर्शक के संदर्भ में २) काल-विभाजन के संदर्भ में और ३) युगीन प्रवृत्तियों के सामूहिक रूप के संदर्भ में ।

---

१ मदन मोहन भारद्वाज - आधुनिक हिन्दी मराठी नाटकों में युगबोध -- -- पृ.८,१२ ।

कालदर्शन के संदर्भ में आधुनिक शब्द से तात्पर्य काल सापेक्ष से हैं -- जो कालावधिविशेष को व्यंजित करता हैं । सामान्य बोलचाल की भाषा में `आधुनिक` का अर्थ हैं -- अतीत से भिन्न अथवा नवीन । लेकिन स्वीकृत अर्थों में आधुनिक शब्द अपने वर्तमान युग से सर्वथा विच्छिन्न होता हैं। कालदेवता का प्रत्येक अगला चरण आधुनिक रहता हैं । कुछ समय बाद वे ही चरण इतिहास के विवेचन का विषाय बनते हैं । उदा.- गुप्त-युग, बौध्द युग ,जैनयुग आदि युगों को आज हम प्राचीन कहते हैं लेकिन अपने काल में वे आधुनिक ही रहे होंगे ।

इसप्रकार यहाँ `आधुनिकता` का एक अर्थ होता हैं --`तात्कालिकता अथवा समसामयिकता । लेकिन डॉ.नगेन्द्र ने इसे संकुचित और सीमित अर्थ में स्वीकार किया हैं । इस अर्थ में आधुनिकता का अर्थ हैं -- वर्तमान का युगबोध । यहाँ दृष्टि वर्तमान पर ही केन्द्रित रहती हैं । आज की स्थिति का यथार्थ परिज्ञान ही आधुनिकता का आधार हैं ।[१]

(२) कालविभाजन की दृष्टि से आधुनिकता का अर्थ बताना सबसे कठिन समस्या हैं । किस युग का आरंभ किस तिथि से हुआ, इसे वैज्ञानिक सत्य के रूप में नहीं बताया जा सकता । वैसे तो इतिहास के कालविभाजन की दृष्टि से आधुनिक युग का आरंभ १८ वीं शती के उत्तरार्ध से माना जाता हैं । हिन्दी साहित्य के संदर्भ में यह कालखंड १९०० सं. से माना जाता हैं ।

आज कल `आधुनिकता` रहनसहन,खानपान और बोलचाल में पश्चिम के अनुकरण के अर्थ में मानी जाती हैं । जो व्यक्ति जितना अधिक पश्चिमी रंग में रंग गया हो, वह उतना ही अधिक आधुनिक समझा जाता हैं । अत: हमारे यहाँ आधुनिकता का अर्थ हैं -- पश्चिमी प्रभाव । पाश्चात्य आधुनिकता का अर्थ डॉ. कुमार विमल के शब्दों में इसप्रकार हैं --`यांत्रिकता,बौध्दिकता और उपयोगितावादी रुचि का एकांगी मिश्रण ।`[२]

---

१ सं.डॉ.कुमार विमल -'अत्याधुनिक हिन्दी साहित्य'- पृ.२०७ ।

२ डॉ. कुमार विमल -'अत्याधुनिक हिन्दी साहित्य'- पृ.२१३ ।

आधुनिकता का स्वरूप --

`आधुनिकता` का स्वभाव चतुर-चंचल कस्तुरीमृग की तरह हैं । आधुनिकता का स्वरूप जो कल था, वह आज हैं, जो आज हैं, वह कल भी हो यह दावा नहीं किया जा सकता । कल की तुलना में आज को नया मानने जैसी स्थिति आधुनिकता के साथ नहीं हैं । अत: आधुनिकता का स्वरूप परिवर्तनशील हैं । वास्तव में आधुनिकता किसी तरह की परिणति नहीं हैं । पुराने को छोडकर जो कुछ बच जाए, या जिसके लिए मनुष्य नियतिग्रस्त हो जाए, उससे भी आधुनिकता का कोई संबंध नहीं बनता । आधुनिकता के संबंध में पहले यह निश्चित करना चाहिए कि आधुनिकता किसी सामयिक तथ्य का नाम नहीं हैं । वस्तुत: आधुनिकता एक तरह की रचनात्मक स्थिति हैं, जिसका अपना दर्शन हैं और जिसकी अपनी निजी वैचारिकता हैं । मनुष्य ने आत्मसाक्षात्कार के क्रम में स्वतंत्र होकर जिस दर्शन का प्रत्यक्षीकरण किया हैं, उसे ही मिले - जुले रूप में आधुनिकता कहा जाता हैं । आधुनिकता एक तरह की संश्लिष्ट विचारपध्दति हैं, जिसका विकास कुछ अस्तित्ववादी दार्शनिकों और साहित्यकारों ने समकालीन विचार-पध्दति के रूप में किया हैं । आधुनिकता को किसी सामाजिक या व्यक्तिगत दर्शन से जोडकर विश्लेषित नहीं किया जा सकता । समकालीन चेतना और जागृति को ध्यान में रखकर स्वतंत्र रूप से आधुनिकता के संबंध में व्यापक दृष्टि से विचार किया जाना चाहिए ।

आधुनिकता का प्रथम विस्फोट धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में हुआ था, जो आज भी आधुनिकता को समझाने के लिए सहायक होता हैं । लेकिन आधुनिकता यहीं तक सीमित नहीं रहती । पहले वैज्ञानिक दृष्टि के कारण धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में चुनौती उत्पन्न की गयी थी, बाद में इसी विज्ञान सम्मत तर्क दृष्टि के कारण धर्म और अध्यात्म पर होनेवाली आस्था धीरे धीरे खत्म हो गयी । मनुष्य, देवता के स्थानपर `पूर्ण मनुष्य` की कल्पना करने लगा ।

आधुनिकता की प्रकृति मूल रूप में इसी तर्कशीलता या प्रश्नचिह्न की निरंतरता से बनी है, जिसके पीछे वैज्ञानिक दृष्टि है । प्रश्नचिह्न लगाने की इस प्रवृत्ति ने चिंतन की जड प्रणालियों को तोडा है । इससे आधुनिक मनुष्य की नयी मानसिकता और बौद्धिक दृष्टि उत्पन्न हुई, जिसका परंपरा से कोई संबंध नहीं ।

आधुनिकता को किसी युगविशेष की उपलब्धि नहीं स्वीकारा जा सकता; क्योंकि हर नया युग कालांतर में बीते युग की अपेक्षा नयेपन का द्योतन करता है । आधुनिकता सिर्फ नयेपन या नवीनता का आवरण नहीं है । आज है, वही कल पुराना हो जाता है । किसी ने अपने युग में नयी बात कही, इसीसे वे आधुनिक नहीं हो जाते । क्योंकि हर युग आधुनिक मनुष्य को जन्म देता रहा है और हर युग अपने युग में आधुनिक रहा है । डॉ. रमेशकुंतल मेघ के अनुसार -- "आधुनिक होना आधुनिक मनुष्य का ही एकाधिकार नहीं रह जाता, क्योंकि आधुनिक मनुष्य (अर्जुन, कौटिल्य, कबीर) भी हुए हैं और इसके पहले भी आधुनिक युगों की कौंध हुई है ।"[१] आधुनिकता को चरितार्थ करने के लिए युग सापेक्ष की प्रतिक्रियात्मक अनुभूतियों के साथ एकरूप होने की आवश्यकता है ।

आधुनिकता तत्कालीन जीवनदर्शन की प्रक्रिया है, जो तत्कालीन परिस्थितियों और प्रवृत्तियों में परिपक्व होने का प्रयत्न करती है । यह हमेशा विकसनशील रहती है । परिस्थितियाँ तथा परिवेश बदलनेपर विचार बदलते हैं, पर प्राचीन काल से चला आया चिरंतनबोध नदी की धारा की तरह प्रवहमान रहता है । हर युग में कुछ नया होता है, कुछ पुराना होता है तथा कुछ आनेवाले युग के लिए खाद रूप में भी होता है । नये और पुराने विचारों में जब संघर्ष होता है और नये विचारों के लिए खाद बनता है तभी आधुनिकता को अर्थ प्राप्त होता है । पुरानी खाद और नये बीज तथा नया वातावरण पाकर जिस नये अर्थ को प्रकट करते हैं, वही आधुनिकता है ।

---

१ डॉ.रमेशकुंतल मेघ - आधुनिक बोध और आधुनिकीकरण - पृ.५६ ।

आधुनिकता ऐसा मूल्य है जिसका प्रस्तुतीकरण हर युग में अपने ढंग से होता है। रुपया पहले भी रुपया ही था, परंतु रुपये का कागज या चैक में बदलकर नये रुप में प्रकट होना आधुनिकता का परिचायक है। तत्कालीन परिस्थितियाँ बीते युग से प्रतिक्रियात्मक ढंग से अलग होकर आनेवाले युग को जो गति प्रदान करती है, उसी जीवनगति से आधुनिकता का गहरा संबंध है। आधुनिकता इसी प्रकार की चिंतन-प्रक्रिया में, गतिशील जीवनदर्शन में तथा तत्कालीन प्रतिक्रिया में अपना अर्थ पाती है।

आधुनिकता भूत और भविष्य की ऐसी सार्थक और सशक्त कडी है जहाँ से वर्तमान अपने बहुपक्षीय अनुभव में स्पष्ट होता है। आधुनिकता वर्तमान की वह स्थिति है जो अतीत की प्रतिक्रिया में स्पष्ट होती है। इसी बात को स्पष्ट करते हुए विपिनकुमार अग्रवाल कहते है -- ' आधुनिकता का एक पहलू वह है, जो बीते हुए से शेअर करता है और दूसरा वह है जो उसकी अपनी देन है, उसका अपना विशेषा गुण है।'[१] अतीत का अन्वेषाण ही उसका प्रमुख होता है। साधारणत: उसकी प्रवृत्ति बीते हुए से विद्रोहात्मक होती है।

आधुनिकता एक ऐसी चीज है, जो हर नये अनुभव के साथ जन्म लेती है। यह अनुभव प्राणी के जन्म के साथ उसके निजीदर्शन के रुप में जन्म लेता है। जीवनयात्रा पूरी करनेपर उसका चिंतन, उसके विचार, अनुभव आनेवाली संस्कृति के लिए आधुनिक बन जाते है।

जो व्यक्ति अपने काल में रहता हुआ भी अपने युग से परे तक फैलने का प्रयत्न करता है, वही आधुनिक है। कौन सा आज बीते कल को सँभालेगा तथा आनेवाला कल बनकर नयी प्रक्रिया के लिए छोड देगा-यही दर्शन आधुनिकता का मूल प्राण है।

---

१ विपिनकुमार अग्रवाल - 'आधुनिकता के पहलू' - पृ.१७।

आधुनिकता एक प्रतिक्रिया तो हैं ही, साथ ही गत्यात्मक और प्रतिक्रियात्मक जीवनदर्शन भी हैं । किसी भी व्यक्ति के विचार को आधुनिक कहलाने के लिए तत्कालीन प्रतिक्रियात्मक जीवनदर्शन से गुजरना पडता हैं । हरिजनों के लिए मंदिरों के द्वार खोल देना आधुनिक चिंतन बोध हैं, परन्तु इस चिंतन को जिस संघर्ष से जाना पडा, यह अपने आप में एक उदाहरण हैं ।

जैसे जैसे परिवेश, परिस्थितियाँ और जीवनबोध बदलते जाते हैं, वैसे वैसे आधुनिकता नयापन ओढती जाती हैं । परन्तु आधुनिकता में दिखाई देनेवाला यह नयापन `लेटेस्ट` का सूचक नहीं हैं । कोई भी भाव या विचार सिर्फ नये हैं, इसीलिए आधुनिक नहीं होते । आधुनिकता के लिए किसी विशिष्ट विचार का निरंतर विकसनशील रहना हैं । आधुनिकता ऐसा जीवनप्रवाह हैं, जिसके लिए मृत्यु अवांछनीय हैं । किसी दर्शन, विचार के मृत या समाप्त हो जानेपर आधुनिकता उसे नकार देती हैं ।

साहित्यिक दृष्टि से किसी भी पात्र के मानव होने की परिकल्पना में विचारों की जो उधेडबुन चलती हैं, वह उस पात्र को आधुनिक बनाती हैं । साहित्यिक जीवन तथा आधुनिकता का पूर्वापर संबंध हैं । परंपरा से जुडा रहकर भी कोई पात्र गतिशील जीवनबोध से प्रभावित होता हैं । आज का जीवनबोध विश्लेषण के नये मानदण्डों के माध्यम से परंपरागत पात्र को विश्लेषित करता हैं । यहीं से आधुनिकता शुरु होती हैं । सामान्य व्यक्ति का अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो जाना आधुनिकता की ही एक प्रक्रिया हैं ।

आधुनिकता परंपरा से काटकर अलग नहीं की जा सकती । आधुनिकता प्रक्रिया के रुप मेंजिसप्रकार परंपरा से संबध्द हैं, उसीप्रकार वह वर्तमान से परे तक जुडी रहती हैं । आधुनिकता में परंपरा और अतीत का सहज विकास होता हैं । आधुनिकता के साथ परंपरा को जोडा गया हैं । वर्तमान पीढी, आनेवाली पीढी को हू-ब-हू वही नहीं देगी, जो अपनी बीती पीढी से ग्रहण कर चुकी हैं । जीवन में कुछ न कुछ छँटता बँटता रहता हैं , जिससे पुराने विचार नये संदर्भ में बदलते रहते

हैं । ` आधुनिकत्व ` ऐसा चतुर इंजिनिअर हैं, जो कच्ची पुलिया को नवीन पुलिया में बदल देता हैं । दूसरे शब्दों में -- आधुनिकता परंपरा के प्राचीन अर्थों को स्पर्श करती हैं, उसे माँजती हैं, खरोंचती हैं और परिमार्जित कर उसमें से चमत्कारिकता तथा नूतन अर्थवत्ता को जन्म देती हैं । इसप्रकार व्यक्ति का सहज विचार ही धीरे धीरे परंपरा बन जाता हैं और परंपरा भी सहज ही परिवर्तित होकर आधुनिकता बन जाती हैं ।

केवल नयी बात नये ढंग से कहना ही आधुनिकता नहीं हैं । शैली तो भावों के अनुरूप स्वत: ही ढलती जाती हैं । शैली बाह्य कलेवर हैं । रूपरंग बदल सकते हैं, लेकिन आत्मा नहीं । आधुनिकता विचारों में होती हैं, केवल बाह्य आवरण में नहीं । आधुनिक युग में नवीन प्रयोगों के मोह से निर्मित अकहानी या अकविता शिल्पगत नये आवरण धारण करनेपर भी आधुनिकता से दूर हैं । साहित्य के बाह्यरूपों में अभिव्यक्ति के माध्यम .... शब्द, बिंब, लय इ. के बदल जानेपर भी आधुनिकता सार्थक नहीं होती । अस्पष्टता तथा भाषागत मनमाने प्रयोग को आधुनिकता नहीं कहा जाता ।

आधुनिक बोध के कारण आज सर्वत्र बौध्दिक सजगता दिखाई देती हैं । आस्था और भावना के स्थान पर बौध्दिक विश्लेषण प्रधान होता गया हैं । विचार के तथा चिंतन के नये बोध का ही यह परिणाम हैं । विज्ञान के प्रभाव के कारण ही मनुष्य के विचार करने की पध्दति बदल गयी हैं । वैज्ञानिक आविष्कारों ने मूल्यों को बदल दिया हैं । युग में होनेवाले इन वैज्ञानिक प्रभाव से ही पारंपरिक मूल्यों की ओर देखने का दृष्टिकोण भी बदल गया हैं । यह दृष्टिकोणों का बदलना ही आधुनिकता हैं ।

✓आधुनिकता विकसनशील एवं गत्यात्मक अनुभव हैं, जो भविष्य के हर मोड पर अग्रिणीत रहता हैं । आधुनिकता एक प्रश्नाकुल मानसिकता हैं, जो बँधी-बँधायी व्यवस्था, मर्यादा या धारणा को तोडती हैं । यह एक ऐसी मानसिकता हैं, जो किसी एक मूल्य, धारणा या सिध्दांत को स्वीकारने से पूर्व उसे जाँचने पडताले

पर बल देती हैं । यह मानसिकता मानव स्वभाव की जटिलता और उसके कारण बनते बिगडते संबंधों और संवेदनाओं से जुडी हैं ।

आधुनिक मनुष्य के बढते हुए ज्ञान और चिंतन ने नित्य-नवीन खोजें की हैं । फलत: प्राचीन मूल्यों, सामाजिक और पारिवारिक संबंधों, रूढीगत विचारों की स्थापना हुई । इसी बात को स्पष्ट करते हुए डॉ.वर्मा कहते हैं -- ' पूर्व निर्धारित उद्देश्य की अपेक्षा क्षण, के प्रति सापेक्ष दायित्व बोध ही आधुनिकता का प्रमुख लक्षण हैं ।'[1] इससे स्पष्ट होता हैं कि जीवन में भोगा हुआ क्षण ही यथार्थ हैं । बोध ही जीवन का सबसे बडा सत्य होता हैं । इस तरह आधुनिकता अस्तित्ववाद के निकट आती हैं ।

आधुनिकता जीवन में अविवेक की अपेक्षा विवेक को, मिथक की अपेक्षा यथार्थ को, श्रध्दा और आस्था की अपेक्षा विश्लेषण को, अप्रतिबध्दता की अपेक्षा प्रतिबध्दता को और ' न ' होने की तुलना में ' होने ' की स्थिति को अधिक महत्व देनेवाली प्रक्रिया हैं ।

आधुनिकता और इतिहास को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता ; क्योंकि इतिहास तथ्यों और घटनाओं के कक्षा में बंद नहीं हैं । इतिहास मानवद्वारा निर्मित, आकांक्षित, विचारित वह यथार्थ अनुभूति हैं जो कालक्रम से बँधकर इतिहास बन जाती हैं । मनुष्य अपने अतीत को वर्तमान में ढालकर वर्तमान को भविष्य के अनुकूल बनाकर उसे सामाजिक व्यवस्था का रूप देता हैं और उसे आधुनिकता कहा जाता हैं ।

इस प्रकार आधुनिकता सामयिक परिवेशों, सामाजिक जीवन की बदलती हुई रेखाओं, समस्याओं, मान्यताओं, विश्वासों से उत्पन्न चेतना होती हैं । आधुनिकता का श्रेय ड्रॉइंगरूपी सजावट या अर्धनग्न वस्त्र पहनकर सडक पर निकल जाना नहीं हैं और न तो आधुनिकता कोई बाह्य-सज्जा, बनावट और उपकरण हैं ।

---

१ लक्ष्मीकांत वर्मा -'आधुनिकता के कुछ विचार सूत्र - नये प्रतिमान - पुराने निकष' - पृ.४२ ।

आधुनिकता व्यक्ति के भीतर की चीज है । आधुनिकता ऐसी जीवनदृष्टि है, जिसे हम जीवन साधन के रूप में प्रयोग करते हैं ।

कुलमिलाकर आधुनिकता के संबंध में कहा जा सकता है -- पिता संतान को जन्म देता है, पिता और पुत्र साथ साथ बढ़ते हैं, दो भाव दो अलग अलग दिशाओं में विकसित होते हैं । पिता से धरोहर रूप में सब कुछ पाकर भी छोटा शिशु अपने ढंग से परिवेश को समझाने और पचाने का प्रयास करता है । ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से एक दिन पुत्र पिता जरूर बनेगा, ऐसी स्थिति में उस परिवेश में नया पुत्र जन्म लेता है । यह सिलसिला कभी न कभी खत्म हो जानेवाली पहेली बन जाता है । ऐसी ही पहेली आधुनिकता है ।

-- निष्कर्ष --

`आधुनिकता` शब्द अंग्रेजी के मॉडर्निटी का हिन्दी रूपांतर है । आधुनिकता को पाश्चात्य देशों में पहले धार्मिक दृष्टिकोण से देखा जाता था और ईसाई धर्म तथा विज्ञान के विकास की दृष्टि से आधुनिकता शब्द था ।

भारतीय साहित्य में आधुनिकता को मुख्यत: कालवाचक अर्थ के रूप में, `प्राचीन` या `गतकालीन` के विरुध्द, कालविभाजन के रूप में और युगीन प्रवृत्तियों के सामूहिक रूप के संदर्भ में तथा विचारपरक दृष्टि से माना जाता था । लेकिन आज हमारे यहाँ आधुनिकता का अर्थ मुख्यत: भारत पर पश्चिमी प्रभाव से उत्पन्न परिस्थिति माना जाता है ।

आधुनिकता का स्वरूप हमेशा परिवर्तनशील होता है । आधुनिकता में नये विचारों के साथ चिरंतन रहनेवाले पुराने विचार भी होते हैं । प्रत्येक युग में आधुनिकता का ढंग अलग होता है ।

जो लेखक वर्तमान में रहकर भी भविष्य तक अपने विचारों के फैलाने का

प्रयत्न करता है, वही आधुनिक कहलाता है । आधुनिकता में प्रतिक्रियात्मक जीवनदर्शन रहता है । परिस्थितियाँ तथा बोध बदलनेपर आधुनिकता में भी बदल होता है । आदमी का अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो जाना आधुनिकता ही है । परंपरा से आधुनिकता का घनिष्ठ संबंध है । आधुनिकता विचारों में है, सिर्फ बाह्य आवरण में नहीं ।

वैज्ञानिक आविष्कारों से लोगों का दृष्टिकोण बदला है । दृष्टिकोणों का बदलना ही आधुनिकता है । आधुनिकता में प्रत्येक सिध्दांत तथा मूल्य को जाँचा और पडताला जाता है । आधुनिकता का अस्तित्ववाद और इतिहास से घनिष्ठ संबंध होता है ।

••